रिपोर्ट सं./Report No. 553(66/10/8)

सत्यमेव जयते

# भारत के महानगरों एवं नगरों में रोजगार एवं बेरोजगार की स्थिति

# Employment and Unemployment Situation in Cities and Towns in India

## एन.एस.एस 66वॉ दौर
## NSS 66th Round

### जुलाई 2009 - जून 2010
### July 2009 - June 2010


नैशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस
**National Sample Survey Office**
सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
**Ministry of Statistics and Programme Implementation**
भारत सरकार
**Government of India**

सितम्बर 2013
September 2013

रिपोर्ट सं./Report No. 553(66/10/8)

सत्यमेव जयते

# भारत के महानगरों एवं नगरों में रोजगार एवं बेरोजगार की स्थिति

# Employment and Unemployment Situation in Cities and Towns in India

## एनएसएस 66वाँ दौर
## NSS 66th Round

(जुलाई 2009 - जून 2010)
(JULY 2009 – JUNE 2010)

नेशनल सैम्पल सर्वे ऑफिस
National Sample Survey Office
सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
Ministry of Statistics and Programme Implementation
भारत सरकार
Government of India

सितम्बर 2013
September 2013

# प्राक्कथन

भारत में रोजगार एवं बेरोजगार पर अखिल भारतीय पंचवार्षिक सर्वेक्षण राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण (एनएसएस) के 66वें दौर के एक भाग के रूप में जुलाई 2009 से जून 2010 के दौरान किया गया। इस सर्वेक्षण में भारत में रोजगार एवं बेरोजगार के विविध पहलुओं पर सूचना और पारिवारिक सदस्यों से संबद्ध कुछ व्यक्तिगत विशिष्टताऐं जैसे- उम्र, लिंग, प्राप्त-सामान्य एवं तकनीकी शिक्षा का स्तर, शैक्षणिक संस्थाओं में वर्तमान उपस्थिति, प्राप्त-व्यवसायिक प्रशिक्षण इत्यादि पर राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय सूचना संग्रहित की गई। इस रिपोर्ट में सम्पूर्ण अवधि के दौरान संग्रहित आँकड़ों पर आधारित, भारत के महानगरों एवं नगरों के लोगों की रोजगार एवं बेरोजगार की स्थिति से सम्बन्धित अनुमान एवं उससे सम्बद्ध विविध विशिष्टताओं को प्रस्तुत किया गया है।

66वें दौर के केन्द्रीय प्रतिदर्श आँकड़ों के आधार पर एनएसएसओ ने भारत में रोजगार एवं बेरोजगार 2009-10 के मुख्य संकेतक जून 2011 में जारी किए। इसके अलावा एनएसएस के 66वें दौर के सर्वेक्षण आँकड़ों के आधार पर रोजगार एवं बेरोजगार के विविध पहलुओं पर आठ विस्तृत रिपोर्ट जारी करने की योजना बनाई गई है। सात ऐसी रिपोर्टें जारी की जा चुकी हैं। वर्तमान रिपोर्ट 'भारत के महानगरों एवं नगरों में रोजगार एवं बेरोजगार की स्थिति' इस श्रेणी में आठवीं एवं अंतिम रिपोर्ट है। कार्यबल को तीन विभिन्न रूपों यथा- सामान्य स्तर, वर्तमान साप्ताहिक स्तर (सीडब्ल्युएस) एवं वर्तमान दैनिक स्तर (सीडीएस) का इस्तेमाल करते हुए मापा गया है। जनगणना 2001 के अनुसार श्रेणी 1 के सत्ताईस महानगरों में (अध्याय तीन में सूचीबद्ध) जिनकी जनसंख्या एक मिलियन या उससे अधिक (आकार श्रेणी 1) है एवं नगरों के दो अन्य आकारों के लिए भी यथा 50,000 से ऊपर एवं एक मिलियन से कम (आकार श्रेणी 2) और जिनकी जनसंख्या 50,000 से कम (आकार श्रेणी 3) है, प्रत्येक के लिए सारणी बनायी गई। इस रिपोर्ट में तीन अध्याय एवं चार परिशिष्ट हैं। इस रिपोर्ट में दिए गए अनुमानों से सम्बन्धित मुख्य निष्कर्ष अध्याय तीन में प्रस्तुत किये गये हैं। अध्याय एक में प्रस्तावना है और अध्याय दो में इस रिपोर्ट में विभिन्न मदों पर किए गए सर्वेक्षण में प्रयुक्त संकल्पनाओं एवं परिभाषाओं की विस्तृत जानकारी दी गई है। अखिल भारतीय विस्तृत सारणी जिस पर यह रिपोर्ट आधारित है, रिपोर्ट के साथ परिशिष्ट 'क' में प्रस्तुत की गई है। प्रतिदर्श अभिकल्प एवं प्राक्कलन प्रक्रिया का विस्तृत विवरण परिशिष्ट 'ख' में दिया गया है। परिशिष्ट 'ग' में आरजीआई कार्यालय द्वारा 1 मार्च 2009 एवं 1 मार्च 2010 को दी गयी प्रक्षेपित जनसंख्या से 1 जनवरी 2010 की जनसंख्या को प्राक्कलित किया गया है । परिशिष्ट 'घ', क्षेत्र में पूछताछ अनुसूची की अनुकृति दी गई है।

एनएसएसओ के सर्वेक्षण अभिकल्प एवं अनुसंधान प्रभाग (एसडीआरडी) ने सर्वेक्षण कार्यप्रणाली एवं रिपोर्ट के प्रारूप के विकास की जिम्मेदारी ली थी। एनएसएसओ के क्षेत्र संकार्य प्रभाग (एफओडी) ने क्षेत्र कार्य पूरा किया जबकि समंक विधायन एवं सारणीयन का कार्य एनएसएसओ समंक विधायन प्रभाग (डीपीडी) द्वारा किया गया। एनएसएसओं के समन्वय एवं प्रकाशन प्रभाग (सीपीडी) ने सर्वेक्षण से सम्बंधित विभिन्न क्रियाकलापों का समन्वय किया।

एनएसएसओ की यह कोशिश रही है कि अपने सर्वेक्षण के रिपोर्ट एवं परिणाम, आँकड़ा-प्रयोक्ताओं की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए समय पर निकालते रहें। इस सर्वेक्षण के मुख्य परिणाम एवं इकाई स्तर आँकड़े क्षेत्र कार्य के पूरा होने के एक वर्ष के भीतर जारी कर दिये गये थे। यह एनएसएसओ के विभिन्न प्रभागों के अधिकारियों के द्वारा विभिन्न कार्यकलापों एवं बेहतरीन नियोजन और निष्पादन के कारण तथा एनएसएसओ के सहायक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के कठिन मेहनत से सम्भव हो सका है। मैं एनएसएसओ के 66वें दौर के कार्यदल समूह एवं राष्ट्रीय सांख्यिकीय आयोग (एनएससी) को सर्वेक्षण के विविध स्तरों पर उनके मूल्यवान मार्गदर्शन के लिए आभारी हूँ। मैं उन विशेषज्ञों का भी आभारी हूँ जिन्होंने रिपोर्ट को सुधारने के लिए अपनी बहुमूल्य टिप्पणियाँ दी हैं।

मैं आशा करता हूँ कि यह रिपोर्ट योजनाकारों, नीति-निर्माताओं और शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगी । इसके विषय वस्तु एवं समावेशन के सुधार के लिए सुझाव सराहनीय होंगे।

(विजय कुमार)
महानिदेशक तथा मुख्य कार्यकारी अधिकारी
राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय

नई दिल्ली
सितम्बर 2013

# PREFACE

An all-India quinquennial survey on employment and unemployment in India was carried out during the period July 2009 to June 2010 as a part of the 66th round of the National Sample Survey (NSS). In this survey, information on various facets of employment and unemployment in India and some individual characteristics associated with household members such as age, sex, level of general and technical education attained, current attendance in educational institutions, vocational training received, etc., were collected at the national and state level. Based on the data collected during the entire period, estimates pertaining to employment - unemployment situation of people in cities and towns in India along with various characteristics associated with them have been presented in this report.

Based on the central sample data of NSS 66th round, the NSSO released the *Key Indicators of Employment and Unemployment in India, 2009 - 10* in June 2011. Apart from this, eight detailed reports are planned to be released on various aspects of employment and unemployment based on NSS 66th round data. Seven such reports have already been released. The present report on *Employment and Unemployment Situation in cities and towns in India* is the eighth and last in the series. Workforce has been measured using three different approaches viz. *usual status*, *current weekly status(CWS)* and *current daily status(CDS)*. Tables have been generated for each of the twenty-seven class I cities (listed in Chapter 3) with population of one million or more (size class 1) as per Population Census 2001 and also for two other size classes of towns viz. those with population 50,000 to less than one million (size class 2) and those with population less than 50,000 (size class 3). The report contains three chapters and four appendices. The main findings relating to the estimates given in this report are presented in Chapter Three. Chapter One gives the *Introduction* and Chapter Two describes in detail the *Concepts & Definitions* used in the survey in connection with various items covered in this report. The detailed all-India tables on which the report is based are presented in Appendix A. Detailed description of sample design and estimation procedure is given in Appendix B. The Projected Population as on 1st January 2010 derived from the Projected Population as on 1st March 2009 and 1st March 2010 supplied by RGI Office has been presented in Appendix C. Appendix D gives a facsimile of the schedule of enquiry canvassed in the field.

The Survey Design and Research Division (SDRD) of the NSSO undertook the development of the survey methodology as well as drafting of the report. The field work was carried out by the Field Operations Division (FOD) of NSSO while the data processing and tabulation work was handled by Data Processing Division (DPD) of NSSO. The Co-ordination and Publication Division (CPD) of NSSO coordinated various activities pertaining to the survey.

NSSO has been endeavouring to bring out its survey results and reports as early as possible for meeting the growing needs of data users. The key results of the survey and unit level data were released within one year of the completion of the field work. This became possible because of the efforts made by the officials of different Divisions of NSSO by meticulous planning and execution of various activities involved and the hard work done by the supporting officials and staff of NSSO. I am thankful to the National Statistical Commission (NSC) and Working Group of NSS 66th-round for their valuable guidance at various stages of the survey. I am also thankful to the Experts for providing valuable comments to improve the report.

I hope, this report will be useful to the planners, policy makers and researchers. Suggestions for improvement of its content and coverage will be highly appreciated.

(Vijay Kumar)
Director General & Chief Executive Officer
National Sample Survey Office

New Delhi
September 2013

## मुख्य बातें

यह रिपोर्ट जुलाई 2009 से जून 2010 के दौरान संचालित एनएसएस के 66वें दौर में रोजगार एवं बेरोजगार पर किये गए आठवें पंचवार्षिक सर्वेक्षण पर आधारित है । यह सर्वेक्षण 7,402 ग्रामों एवं 5,252 नगरीय खंडो के 1,00,957 परिवारों (59,129 ग्रामीण क्षेत्रों में एवं 41,828 नगरीय क्षेत्रों में) में फैला हुआ था, एवं 4,59,784 व्यक्तियों (2,81,327 ग्रामीण क्षेत्रों में एवं 1,78,457 नगरीय क्षेत्रों में) की गणना की गई । रोजगार एवं बेरोजगार तीन विभिन्न उपागमों में मापा गया, जैसे - सामान्य स्तर, एक वर्ष की सन्दर्भ अवधि के साथ, चालू साप्ताहिक स्तर एक सप्ताह की सन्दर्भ अवधि के साथ और चालू दैनिक स्तर, सन्दर्भ सप्ताह के प्रतिदिन के दौरान दैनिक क्रियाकलापों पर आधारित । यदि दूसरे ढंग से यह कहा गया कि सामान्य स्तर श्रमिकों का तात्पर्य वैसे सभी श्रमिकों से होगा, जिसपर सामान्य मुख्य एवं सहायक स्तर के साथ बिचार किया जाय । इस रिपोर्ट में रोजगार एवं बेरोजगार संकेतकों का भारत के प्रत्येक वर्ग 1 के महानगरों के लिए प्राक्कलन प्रस्तुत किया गया है । जनसंख्या जनगणना 2001 के अनुसार प्रत्येक राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश के तीनों आकार वर्ग के नगरों के लिए भी तदनुरूप प्राक्कलन प्रस्तुत किया गया है, जैसे - वर्ग 1 के महानगरों (दस लाख एवं उससे अधिक की जनसंख्या के साथ), वर्ग 2 के नगरों (50,000 से दस लाख की जनसंख्या के साथ) और वर्ग 3 के नगरों (50,000 से कम की जनसंख्या के साथ) । जुलाई 2009 से जून 2010 के दौरान, रोजगार एवं बेरोजगार पर हुए एनएसएस 66वें दौर के सर्वेक्षण के मुख्य निष्कर्ष निम्नलिखित हैं :-

- 15 वर्ष और उससे अधिक आयु वाले सामान्य तौर पर कार्यरत पुरुषों का अनुपात वर्ग 1 के महानगरों के लिए 73 प्रतिशत था, एवं वर्ग 2 आकार के नगरों के लिए 74 प्रतिशत एवं वर्ग 3 आकार वाले नगरों के लिए 76 प्रतिशत था । उसी आयु वर्ग की महिलाओं के लिए तदनुरूप अनुपात - वर्ग 1 के महानगरों के लिए 17 प्रतिशत, वर्ग 2 आकार वाले नगरों के लिए 18 प्रतिशत एवं वर्ग 3 आकार वाले नगरों के लिए करीब 21 प्रतिशत थे ।

- 2004-05 एवं 2009-10 के बीच 15 वर्ष एवं उससे अधिक के सामान्य रूप से कार्यरत पुरुषों के अनुपात में वर्ग 1 के महानगरों के लिए 3 प्रतिशत बिन्दुओं की कमी आई, वर्ग 2 एवं 3 आकार के प्रत्येक नगरों के लिए 2 प्रतिशत बिन्दुओं की कमी आई । इस अवधि के दौरान, महिलाओं के लिए तदनुरूप कमी, वर्ग 1 के महानगरों के लिए 3 प्रतिशत बिन्दु, श्रेणी 2 आकार के नगरों के लिए 4 प्रतिशत बिन्दुओं एवं वर्ग 3 आकार वाले नगरों के लिए 7 प्रतिशत बिन्दुओं की कमी आई ।

- वर्ग 1 के महानगरों के बीच, कामगार जनसंख्या अनुपात (का.ज.अ.) 15 वर्ष एवं उससे अधिक आयुवाले पुरुषों के लिए सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) सूरत में सबसे अधिक (87 प्रतिशत) और मेरठ में सबसे कम, (49 प्रतिशत) था, जबकि महिलाओं के लिए, यह का.ज.अ. वाराणसी में सबसे अधिक (35 प्रतिशत) एवं आगरा में सबसे कम (2 प्रतिशत) था ।

- 2009-10 की अवधि के दौरान, स्व-कार्यरत व्यक्तियों अथवा आकस्मिक श्रमिकों के मुकाबले सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) नियमित मजदूर/वेतनभोगी कर्मचारियों का अनुपात वर्ग 1 के महानगरों एवं वर्ग 2 आकार के नगरों में महिलाओं एवं पुरुषों दोनों में अधिक था । वर्ग 3 के आकार वाले नगरों के लिए पुरुषों एवं महिलाओं दोनों में स्वनियोजितों का अनुपात नियमित मजदूर/वेतनभोगी कर्मचारियों एवं आकस्मिक श्रमिकों सेज्यादा था ।

- 15 वर्ष एवं उससे अधिक आयु के पुरुष कामगारों में, वर्ग 1 के महानगरों में सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) करीब 52 प्रतिशत एवं वर्ग 2 आकार के नगरों में करीब 43 प्रतिशत और करीब 31 प्रतिशत वर्ग 3 आकार के नगरों नियमित मजदूर/वेतनभोगी कर्मचारी थे । महिलाओं के लिए तदनुरूप अनुपात वर्ग 1 के महानगरों एवं वर्ग 2 आकार एवं वर्ग 3 आकार के नगरों के लिए क्रमश: 58 प्रतिशत, 42 प्रतिशत एवं 23 प्रतिशत था ।

- सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) में 15 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र के पुरुष कामगारों में वर्ग 1 के महानगरों में करीब 39 प्रतिशत वर्ग 2 आकार के नगरों में करीब 40 प्रतिशत एवं वर्ग 3 आकार के नगरों के लिए करीब 45 प्रतिशत स्व-कार्यरत थे । महिलाओं के लिए तद्रुरूप अनुपात, वर्ग 1 के महानगरों वर्ग 2 आकार के नगरों, एवं वर्ग 3 आकार के नगरों के लिए क्रमश: 33 प्रतिशत, 41 प्रतिशत, एवं 47 प्रतिशत् था ।

- 2004-05 एवं 2009-10 के बीच, 15 वर्ष एवं उससे अधिक आयु वाले पुरुषों के लिए बेरोजगारी दर पूर्ण रूप से वर्ग I के महानगरों में सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) पर एक ही स्तर में रहा, और यह वर्ग 2 आकार के नगरों के लिए 1 प्रतिशत बिन्दु घट गया एवं वर्ग 3 आकार के नगरों के लिए 2 प्रतिशत बिन्दुओं से कम हुआ । महिलाओं के लिए, 2004-05 एवं 2009-10 के बीच सामान्य स्तर में यह बेरोजगारी दर वर्ग 1 के महानगरों के लिए 1 प्रतिशत बिन्दु बढ़ा एवं दोनों वर्ग 2 एवं वर्ग 3 आकार के नगरों के लिए प्रत्येक में क्रमश: करीब 2 प्रतिशत बिन्दुओं की कमी आई ।

- सभी आकार वर्ग वाले नगरों में 2009-10 के दौरान तृतीय क्षेत्र में अन्य दो क्षेत्रों के मुकाबले सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) में कामगारों में कामगारों का शेयर सबसे अधिक था । नगरीय भारत में 15 वर्ष एवं उससे अधिक आयु वाले पुरुष कामगारों में करीब 59 प्रतिशत तृतीय क्षेत्र में, करीब 35 प्रतिशत माध्यमिक क्षेत्र में ओर करीब 6 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत थे । महिलाओं के लिए तद्रुरूप अनुपात क्रमश: करीब 53 प्रतिशत, 33 प्रतिशत एवं 14 प्रतिशत था ।

- सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) के अनुसार 15 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र के पुरुष कामगारों में वर्ग 1 के सभी महानगरों में करीब 64 प्रतिशत तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत थे, करीब 35 प्रतिशत माध्यमिक क्षेत्र में एवं करीब 1 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत थे । महिलाओं के लिए तद्रुरूप अनुपात क्रमश: करीब 67 प्रतिशत, 31 प्रतिशत, एवं 2 प्रतिशत था ।

- सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) के अनुसार 15 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र के पुरुष कामगारों में वर्ग 2 आकार के नगरों में करीब 60 प्रतिशत तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत थे, करीब 36 प्रतिशत माध्यमिक क्षेत्र में एवं करीब 4 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत थे । महिलाओं के लिए तद्रुरूप अनुपात क्रमश: करीब 57 प्रतिशत्, 34 प्रतिशत एवं 9 प्रतिशत था ।

- सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) के अनुसार 15 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र के पुरुष कामगारों में वर्ग 3 आकार के नगरों में करीब 54 प्रतिशत तृतीय क्षेत्र में कार्यरत थे, करीब 33 प्रतिशत माध्यमिक क्षेत्र में एवं करीब 13 प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत थे । महिलाओं के लिए तद्रुरूप अनुपात क्रमश: करीब 36 प्रतिशत, 34 प्रतिशत, एवं 30 प्रतिशत था ।

- सामान्य स्तर (पीएस+एसएस) के अनुसार 15 वर्ष एवं उससे अधिक उम्र के पुरुष कामगारों में माध्यमिक क्षेत्र में पंजीकृत वर्ग 1 के महानगरों के लिए 2004-2005 की तुलना में 2009-2010 के दौरान कुल कामगारों के शेयर में 3 प्रतिशत बिन्दुओं की कमी हुयी, किन्तु वर्ग 2 आकार, एवं वर्ग 3 आकार के नगरों में क्रमश: करीब 2 एवं 1 प्रतिशत बिन्दुओं की वृद्धि हुयी ।

# Highlights

This report is based on the eighth quinquennial survey on employment and unemployment conducted in the 66th round of NSS during July 2009 to June 2010. The survey was spread over 7,402 villages and 5,252 urban blocks covering 1, 00,957 households (59,129 in rural areas and 41,828 in urban areas) and enumerating 4, 59,784 persons (2, 81,327 in rural areas and 1, 78,457 in urban areas). Employment and unemployment were measured with three different approaches, viz. *usual status* with a reference period of one year, *current weekly status* with one week reference period and *current daily status* based on the daily activity pursued during each day of the reference week. Unless otherwise stated, *usual status* workers will mean all workers taking into consideration the *usual principal* and *subsidiary status* together. In this report, estimates of the employment and unemployment indicators are presented for each of the class 1 cities in India. The corresponding estimates are also presented for each State/UT for three size classes of towns, as per *Population Census 2001,* viz. class 1 cities (with population one million and above), class 2 towns (with population 50,000 to one million) and class 3 towns (with population less than 50,000). Some of the key findings of the 66th round of NSS survey on employment and unemployment conducted during July 2009 to June 2010 are stated below.

- The proportion of usually employed males of age 15 years and above was 73 per cent for class 1 cities and 74 per cent for size class 2 towns and about 76 per cent for size class 3 towns. For females of the same age group the corresponding proportions were - 17 per cent for class 1 cities, 18 per cent for size class 2 towns and nearly 21 per cent for size class 3 towns.

- Between 2004-05 and 2009-10 the proportion of usually employed males of age 15 years and above decreased by 3 percentage points for class 1 cities, 2 percentage points for size class 2 and 3 towns each. During this period, corresponding decrease for females was 3 percentage points in class 1 cities, 4 percentage points for size class 2 towns and 7 percentage points for size class 3 towns.

- Among the class 1 cities, the worker population ratio (WPR) for males of age 15 years and above in the usual status (ps+ss), was the highest in Surat (87 per cent) and the lowest in Meerut (49 per cent), while for females, WPR was the highest in Varanasi (35 per cent) and the lowest in Agra (2 per cent).

- During the period 2009-10, the proportion of regular wage/salaried employees, in the usual status (ps+ss), both among males and among females was higher than that of self-employed persons or casual labourers in class 1 cities and size class 2 towns. For size class 3 towns, proportion of self-employed was higher than regular wage/salaried employees and casual labourers for both males and females.

- Among male workers of age 15 years and above in the usual status (ps+ss), about 52 per cent in class 1 cities, about 43 per cent in size class 2 towns and about 31 per cent in size class 3 towns were regular wage/salaried employees. Corresponding proportions for females were 58 per cent, 42 per cent and 23 per cent for class 1 cities, size class 2 towns and size class 3 towns, respectively.

- Among male workers of age 15 years and above in the usual status (ps+ss), about 39 per cent in class 1 cities, about 40 per cent in size class 2 towns and about 45 per cent in size class 3 towns were self-employed. Corresponding proportions for females were 33 per cent, 41 per cent and 47 per cent for class 1 cities, size class 2 towns and size class 3 towns, respectively.

- For males of age 15 years and above, the unemployment rate in the usual status (ps+ss) remained at the same level between 2004-05 and 2009-10 in class 1 cities and it decreased by 1 percentage point for size class 2 towns and by 2 percentage points for size class 3 towns. For females, between 2004-05 and 2009-10, the unemployment rate in the usual status increased by 1 percentage point in class 1 cities and decreased for both size class 2 and size class 3 towns by nearly 2 percentage points each.

- Among the workers in the usual status (ps+ss), the *tertiary sector* had the highest share of workers in 2009-10 compared to other two sectors in all size class of towns. Among male workers of age 15 years and above in urban India, about 59 per cent were engaged in *tertiary sector,* about 35 per cent in *secondary sector* and about 6 per cent in *primary sector*. Corresponding proportions for females were about 53 per cent, 33 per cent and 14 per cent, respectively.

- Among male workers of age 15 years and above according to the usual status (ps+ss) in all class I cities, about 64 per cent were engaged in *tertiary sector,* about 35 per cent in *secondary sector* and about 1 per cent in *primary sector*. Corresponding proportions for females were about 67 per cent, 31 per cent and 2 per cent, respectively.

- Among male workers of age 15 years and above according to the usual status (ps+ss) in size class 2 towns, about 60 per cent were engaged in *tertiary sector,* about 36 per cent in *secondary sector* and about 4 per cent in *primary sector*. Corresponding proportions for females were about 57 per cent, 34 per cent and 9 per cent, respectively.

- Among male workers of age 15 years and above according to the usual status (ps+ss) in size class 3 towns, about 54 per cent were engaged in *tertiary sector,* about 33 per cent in *secondary sector* and about 13 per cent in *primary sector*. Corresponding proportions for females were about 36 per cent, 34 per cent and 30 per cent, respectively.

- Among male workers of age 15 years and above, according to usual status (ps+ss), the *secondary sector* registered nearly 3 percentage points decrease in the share of total workers during 2009-10 compared to 2004-05 for class 1 cities but increased for size class 2, size class 3 towns by 2 and 1 percentage points respectively.

# Contents


| | | Page |
|---|---|---|
| **Chapter One** | **Introduction** | 1-6 |
| **Chapter Two** | **Concepts and Definitions** | 7-15 |
| **Chapter Three** | **Summary of Findings** | 16-37 |
| **Appendix A** | **Detailed Tables: Table C1 to Table C4** | A1-A96 |
| **Appendix B** | **Sample Design and Estimation Procedure** | B1-B8 |
| **Appendix C** | **Population Projection** | C1-C3 |
| **Appendix D** | **Schedule on Employment and Unemployment (Sch. 10)** | D1-D16 |


## Appendix A

## Detailed Tables


| Table No. | Title | Page |
|---|---|---|
| Table (C1) | Per 1000 distribution of persons of age 15 years and above by broad usual activity status taking also into consideration the subsidiary economic status of persons categorised 'not working' in the principal status for each class I city in India/ different size class of towns for each State/UT | A1-A24 |
| Table (C2) | Per 1000 distribution of persons of age 15 years and above by broad current weekly activity status for each class I city in India/ different size class of towns for each State/UT | A25-A48 |
| Table (C3) | Per 1000 distribution of person-days of persons of age 15 years and above by broad current daily activity status for each class I city in India/ different size class of towns for each State/UT | A49-A72 |
| Table (C4) | Per 1000 distribution of usually 'working' (ps+ss) persons of age-group 15 years & above by the broad industry division for each class I city in India/ different size class of towns for each State/UT | A73-A96 |

NOTES ON TABLES

1. Estimates are provided for different class 1 cities, size class 2 towns, size class 3 towns and for urban India as a whole for males and females separately.

2. The estimates presented in the report, in general, refer to the mid-point of the survey period (July 2009-June 2010) of NSS 66$^{th}$ round, i.e., 01.01.2010.

3. It may be noted that as the tables are generally presented as 'per 1000 distribution', the figures are rounded off. Thus, while using the ratios from the survey results, it is to be noted that the accuracy of these derived aggregates will be limited to the number of significant digits available in the ratio or percentage estimates presented in the report. The estimated aggregates, wherever possible, can be used to get ratios with more significant digits.

4. If there is no sample person in a particular category, the estimated persons in that category become zero (0). Estimated numbers per 1000 are also shown as zero (0), when they are greater than zero (0) but less than 0.5.

5. In the detailed tables, in some of the deeper classifications, some sample sizes may be small and this may have a bearing on the precision of the corresponding estimates.

6. The cell-level figure in the tables, when added up, may not exactly be equal to the figure shown against the 'total' column (or line) due to (i) rounding off and/ or (ii) presence of non-response cases.